



वेलगांव। 'हिन्दी दिवस' के अवसर पर ब्र.कु.विद्या बहन को 'गुलदस्ता' भेंट कर सम्मानित करते हुए ज्योति कॉलेज के प्रिंसीपल अरूणा लाड।



भटिंडा। 'आध्यात्मिक चित्र प्रदर्शनी' का उद्घाटन करने के पश्चात् सांसद हरसिमरत कौर बादल को 'ईश्वरीय सौगात' भेंट करते हुए ब्र.कु.कैलाश बहन तथा अन्य।



चोपड़ा। 'तनाव मुक्त जीवन' कार्यक्रम का उद्घाटन करते हुए विधान सभा अध्यक्ष अरूणभाई गुजराती, विधायक कैलास पाटील, ब्र.कु.डॉ.प्रमोद मसंद, ब्र.कु.मोनाक्षी बहन एवं ब्र.कु.मंगला बहन।



चूरु। 'कन्या बचाओ' झांकी का उद्घाटन करते हुए जिला चैरिटेबल ट्रस्ट के मुख्य ट्रस्टी बी.डी.अग्रवाल, ब्र.कु.सुमन बहन।



हांसी। 'अपराध मुक्त समाज' का दीप प्रज्वलित कर उद्घाटन करते हुए नरेन्द्र म्याणा जी, बी.एल.महेश्वरी, ब्र.कु.पुष्पा बहन, ब्र.कु.पला बहन तथा बार एसोसिएशन के सदस्य।



श्रीनगर। जम्मू काश्मीर के सिंचाई मंत्री गुलाम हसन मोर को 'रक्षा-सूत्र' बांधते हुए ब्र.कु.सुदर्शन बहन।

ऐसा दशहरा मनाओ अबकी बार



घुस आये मन में पाँच विकार
मचा रहे ये सर्वत्र हाहाकार
हर नर-नारी पर इनका अधिकार
गिरावट में जा रहा सब संसार
ये रुलाने वाले रावण इनका यादगार
लो हाथ में तुम ज्ञान की तलवार
परमात्म याद की लगाओ इसमें धार
कूद पड़ो करने पंच भूतों का संहार
खाली न जाये तुम्हारा कोई वार
कागज के पुतले जलाने से क्या होगा
ऐसा दशहरा मनाओ अबकी बार
ईश्वरीय शक्ति बनी तुम्हारा आधार
मत भूलो विजय जन्मसिद्ध अधिकार
पुरानी दुनिया तो है जाने को तैयार
स्वर्गिन दुनिया को है अब तुम्हारा इंतजार
फिर होगी घर-घर में सच्ची दीपावली
इन एडवांस मुबारक हो बार-बार
-ब्र.कु.अनु, अलवर

संसार को विषमय ... पृष्ठ 2 का शेष

नहीं। नागार्जुन ने सार रूप में कहा कि हम जो नहीं है वे ही देखते रहते हैं। और भ्रम को दुनिया में जीते हैं। संसार भी ऐसा ही है। सौंग है ही नहीं और तू समझ बैठा है कि सौंग है। संसार भ्रम है और तू कहता है कि संसार झूटता नहीं है। संसार किसका हुआ है जो तेरा भी हो सकता? संसार पकड़ने से पकड़ में नहीं आता। इसलिए भ्रम को दुनिया से बाहर आना जरूरी है।

इसलिए वह चिंतक ने 'मुक्त हो जाओ' ये बात बाहर निकलने की बात सत्य। मनुष्य झूटने चाहता है और जीवन उसे बांधना चाहता है। यह खेल मनुष्य जब तक जीता है तब तक चलता ही रहता है। जीवन को मात्र कलात्मक रूप से देखने की जरूरत है। जीवन एक साधना है। उपासना है इसलिए जीवन में मिली हुई प्रत्येक क्षण सुंदरता पूर्वक जीकर शक्ति से जीना यही जीवन की सार्थकता है।

मानो की संसार विषमय है, तब भी उसे अमृतमय कैसे बनाना है यही मानव के समक्ष चुनौति है। जीवन को विषमय संसार से अमृतमय संसार बनाने का नये मार्ग कौन से है?

1. दुनिया भल बेईमान हो आप अपनी जात के प्रति इमानदार रहें।
2. मुझे कोई दुःखी कर नहीं सकता सिवाए की मेरा स्वभाव और दृष्टिकोण, यह बात याद रख दुःख से डरना नहीं।
3. दुनिया बदलने वाली नहीं, इसलिए मेरा स्वभाव बदलना चाहिए, क्योंकि सुख की चाबीमेरे स्वभाव के प्रत्येक परिस्थिति में प्रसन्न रहने की वृत्ति के हाथ में है। आपको जात को बदलने का अवसर दीजिए।
4. मनुष्य के स्वभाव को पहचान कर उनके साथ आपके वर्तन और व्यवहार शैली तय करें। सद्भाव शुभभाव को बिना मूल्य वितरण करें, क्रोध पर विजय पाकर।

दुःख के समय शांति के वायब्रेशन्स क्रियेट करें

प्रश्न:- सच में मैं वही बात तो कह रही हूँ ना! वो परिस्थिति जिस मुझे पर हम थे उस परिस्थिति में जो कहीं और हो रही थी, उसमें पूरी तरह से, जो पूरे लोग टी.वी. देख रहे थे, उन सबके मस्तिष्क का अपहरण ही तो कर लिया।

उत्तर - अगर हम देख भी रहे हैं और इन्फॉर्मेशन ले भी रहे हैं, लेकिन उसके बाद मेरे माइंड में तुरंत ही आना चाहिए कि अब मेरी जिम्मेवारी क्या है।

मैं ब्रह्माकुमारीज के बारे में एक बहुत सुंदर घटना बताती हूँ, मैं ये कह नहीं रही हूँ कि ऐसा होना चाहिए। कहीं भी दुनिया के किसी भी हिस्से में ऐसा कुछ ऊपर-नीचे हो जाता है, चाहे वो प्राकृतिक आपदा के रूप में हो या ऐसी कोई घटना घटित हो गयी हो, तो तुरंत ही हमारे हर सेंटर पर जितने भी भाई-बहनें हैं, वो सामूहिक रूप से मेडिटेशन करते हैं। हम सब इकट्ठे मिलकर अलग-अलग अपनी रीति से घर पर तो करते ही हैं। लेकिन सामूहिक रूप से एक निश्चित समय निर्धारित करके हम सब सेंटर पर इकट्ठे मिलकर शांति और प्यार के वायब्रेशन्स क्रियेट करते हैं और वहां तक पहुंचते हैं, इसे हम मनसा सेवा कहते हैं। क्योंकि परमात्मा हमेशा ये कहते हैं कि दर्द तो ऑलरेडी वहां है, आप दर्द के बारे में चर्चा करते हो, दर्द को खबरें सुन रहे हो, इससे और ही दर्द बढ़ता जा रहा है। उस समय आपकी जिम्मेवारी क्या होती है? वहां दर्द है तो हमें क्या भेजना है? वहां हमें प्यार भेजना है, शांति भेजनी है, लेकिन वो कब भेज पायेंगे? जब हम डिटैच होंगे। लेकिन अगर मैं ही दर्द में चली गयी, हाय! ये क्या हुआ, कैसे हुआ, तो इससे दर्द और ही बढ़ता है और वो शक्ति नहीं बनती है।

प्रश्न - हम अनजाने में ही उस दर्द को और ही भेजे जा रहे हैं!

उत्तर - हमें तो लगता है कि ओह! मैं तो दिल्ली में बैठी हूँ, दुर्घटना तो बम्बई में हुई, तो मैं वहां कैसे भेज सकती हूँ, लेकिन यह सत्य नहीं है।

शुशानुमा
जीवन जीने
की कला
(अवेकनिंग विथ ब्रह्माकुमारीज से)



-ब.कु.शिवानी

यह सामूहिक रूप से वायब्रेशन है।

प्रश्न:- ब्र.कु.शिवानी, ये बात तो समझ में आती है, लेकिन जब हमारे विपरीत चीजें हो रही होती है सोसायटी के, हिंसा के, अमानवीय व्यवहार के, तो हम ही तो हैं, इंसान ही तो है जिन्होंने अपनी आवाज पर रस कर लिया है। अगर हम स्टेबल होकर देख रहे हैं या स्वीकार कर रहे हैं उस चीज को कि ऐसा नहीं होना चाहिए।

उत्तर - तो क्या व्यक्ति निष्क्रिय हो जाता है!

प्रश्न - हाँ। मतलब कि आप बहुत सुस्त हो जाते हैं। आपको अपनी बात कहने का भी तो जरूरिया चाहिए।

उत्तर - लेकिन अपनी बात कहने का जो तरीका है, एक तो वो महत्वपूर्ण है और दूसरा अपनी बात कहने के लिए पहले आपकी सोच में बहुत स्पष्टतः होनी चाहिए। हम जिस अटैक के बारे में बात कर रहे हैं उस समय मुख्य रूप से तीन आवेग वातावरण में बहुत हावी थे - गुस्सा, दर्द और आघात। एक पूरा दुःख का माहौल हर जगह क्रियेट हो गया। जब हम इन तीनों भावनाओं के वशीभूत हो जाते हैं तो क्या हमारे थॉट्स में स्पष्टतः रहेगी? क्या हम उस समय सही दिशा में सोच पायेंगे? सही बात को बोल पायेंगे? अब इसी स्पेसिफिक बात को भी अगर हम देख लें। जितनी दिन वो न्यूज में था, हम देख रहे थे क्या हो रहा है उस समय हर कोई गुस्से में था, हर कोई उस संबंध में ही बात कर रहा था, ये प्रश्नचिन्ह है कि हमने उस समय में क्या किया?

प्रश्न - ये तो एकीकृत रूप से क्रोध का रूप था!

उत्तर - एकीकृत क्रोध था। लेकिन इसका परिणाम...? यदि आप अपने विचार प्रगट करना ही चाहते हैं तो इसके लिए हमारे थॉट में बहुत ही स्वच्छता की जरूरत होती है, हम यह सोचते हैं कि क्रोध और प्रतिक्रिया से मिश्रित आवाज ज्यादा प्रभावी होती है। आप जानते हैं कि यह जैसे साधारण सी बात भी है तो बड़ी बात भी है। छोटी बात भी ऑफिस में भी हम देखते हैं या घर पर भी मैं जोर चिल्लाकर बोलूंगी ना तो आपको ज्यादा ठीक से समझ में आयेगा। (क्रमशः)